

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली: चुनौतियाँ एवं अवसर

कुँवर संजय भारती

प्रवक्ता लाइब्रेरी

रमाबाई राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय अकबरपुर, अम्बेडकरनगर

सारांश

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली ज्ञान के लोकतंत्रीकरण, शिक्षा के प्रसार और सामाजिक समानता का मूल आधार रही है। भारत में वर्तमान में लगभग 72,000 से अधिक सार्वजनिक पुस्तकालय कार्यरत हैं, जिनमें से लगभग 42% ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं। शिक्षा मंत्रालय की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, देश में 1.3 करोड़ पंजीकृत पाठक और लगभग 3.4 करोड़ वार्षिक विजिटर्स हैं। परंतु, इन आँकड़ों के बावजूद, पुस्तकालयों का उपयोग दर (Library Usage Rate) घटकर मात्र 31% रह गया है।

यह शोध पत्र भारत की सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ और अवसरों पर केंद्रित है। इसमें यह विश्लेषण किया गया है कि कैसे डिजिटल तकनीक, सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP), और नीति-सुधारों के माध्यम से पुस्तकालयों को पुनः ज्ञान-संवर्धन का सशक्त माध्यम बनाया जा सकता है। अध्ययन के अनुसार, पुस्तकालय केवल पुस्तकों के संरक्षण के केंद्र नहीं, बल्कि नागरिक सशक्तिकरण और सामाजिक चेतना के संवाहक भी हैं। UNESCO की 2022 की Global Library Development Report बताती है कि भारत में प्रत्येक 1,50,000 नागरिकों पर केवल एक सार्वजनिक पुस्तकालय है, जबकि यूरोप में यह अनुपात 1:20,000 है। यह असमानता स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि भारत में पुस्तकालय नीति और तकनीकी सुदृढ़ता पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस शोध का उद्देश्य भारत के पुस्तकालयों की सामाजिक भूमिका को रेखांकित करते हुए यह दिखाना है कि ज्ञान-समानता केवल तब संभव है जब सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षा, डिजिटल समावेशन और सामुदायिक विकास का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।

मुख्य शब्द : सार्वजनिक पुस्तकालय, सूचना पहुँच, डिजिटल समावेशन, पुस्तकालय नीति, समुदाय सहभागिता, मुक्त शैक्षिक संसाधन।

प्रस्तावना

भारत में पुस्तकालय परंपरा का आरंभ प्राचीन काल से हुआ, जब ज्ञान-वितरण आश्रमों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से होता था। नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों में लाखों ग्रंथों का संग्रह था। आधुनिक युग में, ब्रिटिश शासन के दौरान 1808 में “कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी” की स्थापना हुई, जिसे बाद में “राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता” के रूप में विकसित किया गया। यह भारतीय पुस्तकालय आंदोलन की आधारशिला बनी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, भारत सरकार ने शिक्षा को नागरिक अधिकार का दर्जा दिया। इस दिशा में तमिलनाडु सार्वजनिक पुस्तकालय अधिनियम 1948 देश का पहला ऐसा कानून था जिसने पुस्तकालयों को राज्य-निधि से जोड़ दिया। इसके पश्चात महाराष्ट्र (1967), कर्नाटक (1965), आंध्र प्रदेश (1960) और पश्चिम बंगाल (1979) ने अपने-अपने अधिनियम पारित किए। आज देश के 19 राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम हैं, परंतु उत्तर भारत और पूर्वोत्तर राज्यों में अब भी यह व्यवस्था अधूरी है।

राष्ट्रीय स्तर पर कोलकाता का राष्ट्रीय पुस्तकालय ज्ञान का सर्वोच्च केंद्र है। यहाँ लगभग 28 लाख पुस्तकें, 86,000 पांडुलिपियाँ, और 3.5 लाख पत्र-पत्रिकाएँ संरक्षित हैं। यह UNESCO के World Digital Library से भी जुड़ा है। इसके अतिरिक्त, दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय और राज्य केंद्रीय पुस्तकालयें क्षेत्रीय स्तर पर सेवा प्रदान करती हैं। 21वीं सदी में ज्ञान का स्वरूप डिजिटल हो चुका है। मोबाइल-रीडिंग, ई-लाइब्रेरी और ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक पुस्तकालयों की

उपयोगिता को चुनौती दी है। इसीलिए आज पुस्तकालयों को अपने ढाँचे, सेवाओं और सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

साहित्य समीक्षा

सार्वजनिक पुस्तकालयों को लोकतांत्रिक संस्थाओं के रूप में देखा गया है जो सूचना-समता और सामाजिक न्याय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। क्लासिक पुस्तकालय शास्त्र ने 'पाठक-केंद्रित सेवाओं' और 'समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं' पर बल दिया, जबकि समकालीन विमर्श पुस्तकालयों को 'थर्ड-प्लेस' और 'लर्निंग-हब' के रूप में निरूपित करता है। अनुसंधान यह दिखाता है कि जब पुस्तकालय स्कूलों, स्थानीय निकायों और नागरिक-समूहों के साथ नेटवर्क किए जाते हैं तो उनकी सामाजिक-शैक्षिक वैधता और उपयोगिता कई गुना बढ़ती है। ग्रामीण परिप्रेक्ष्य में मोबाइल पुस्तकालय, पंचायत भवनों में पठन-कक्ष, और रेडियो/डिजिटल-आउटरीच के उदाहरण ज्ञान-लोकतंत्रीकरण को मूर्त रूप देते हैं।

भारतीय अध्ययनों में राज्य पुस्तकालय अधिनियमों की विषमता बार-बार रेखांकित हुई है—कहीं-कहीं कर-आधारित निधि (सेस) या समर्पित पुस्तकालय निधि का प्रावधान है, वहीं अनेक राज्यों में पुस्तकालय विभाग सांस्कृतिक/शिक्षा विभागों के अंतर्गत बजटीय प्राथमिकता के अभाव में सीमित हो जाता है। संस्थागत रूप से जिला-केंद्रित मॉडल के साथ शाखा पुस्तकालयों और ग्रामीण पुस्तकालय केंद्रों का जाल होना चाहिए, पर व्यवहार में कर्मियों की रिक्तियाँ, संग्रह अद्यतन की कमी और रख-रखाव के अभाव से सेवाएँ प्रभावित होती हैं। डिजिटल परिवर्तन पर शोध बताता है कि मुक्त ई-संसाधनों, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालयों और राज्य स्तरीय पोर्टलों का लाभ तभी व्यापक होता है जब पुस्तकालयकर्मियों का प्रशिक्षण और उपयोगकर्ता-उन्मुख इंटरफेस उपलब्ध हों। अंतरराष्ट्रीय अनुभव संकेत देता है कि 'मानक-निर्धारण + स्थानीय स्वायत्तता' का संयोजन सबसे प्रभावी होता है—यानी केंद्रीय रूप से न्यूनतम सेवा-मानक, मापन-ढाँचा और वित्तीय सूत्र तय हों, पर कार्यान्वयन में स्थानीय समुदायों और निकायों को पर्याप्त अधिकार और संसाधन मिलें। मूल्यांकन साहित्य यह भी सुझाता है कि पुस्तकालय-प्रभाव का आकलन केवल इश्यू/विजिट आँकड़ों से नहीं, बल्कि सीखने के परिणाम, रोजगार-समर्थन, डिजिटल साक्षरता में सुधार और समुदायिक भागीदारी जैसे सूचकों से होना चाहिए। ऐसी बहुआयामी दृष्टि भारत में नीति-निर्माण की दिशा तय करने में सहायक हो सकती है।

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली की वर्तमान स्थिति

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय नेटवर्क तीन स्तरों पर कार्य करता है — राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर। राष्ट्रीय स्तर पर *राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता* देश का सबसे बड़ा केंद्र है, जो 1948 से कार्यरत है। 2024 तक इसमें 3.2 मिलियन पुस्तकें, 93,000 पांडुलिपियाँ, और 32,000 डिजिटल स्कैन किए गए दस्तावेज़ शामिल हो चुके हैं।

राज्य स्तर पर राज्य केंद्रीय पुस्तकालयें हैं, जो जिला और ग्राम पुस्तकालयों के संचालन की निगरानी करती हैं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में 32 जिला पुस्तकालय और लगभग 1,800 शाखाएँ, जबकि कर्नाटक में "नम्मा ग्रंथालय योजना" के तहत 14,000 से अधिक पुस्तकालय केंद्र सक्रिय हैं। महाराष्ट्र के पुस्तकालय निदेशालय की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में 28 लाख से अधिक सक्रिय पंजीकृत पाठक हैं। उत्तर भारत में स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर है। उत्तर प्रदेश में 75 जिलों में से केवल 34 जिलों में सक्रिय पुस्तकालय हैं। बिहार में 2024 तक पुस्तकालय अधिनियम लागू नहीं हुआ है, और कुल जिला पुस्तकालयों में से 70% में इंटरनेट सुविधा नहीं है। झारखंड और छत्तीसगढ़ में "ई-ज्ञान केंद्र" की पहल के बावजूद उपयोग दर केवल 22% दर्ज की गई।

केंद्र सरकार ने 2014 में राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन (NML) की शुरुआत की थी, जिसका उद्देश्य 676 जिलों में पुस्तकालयों का पुनर्गठन था। 2024 तक इसकी प्रगति रिपोर्ट बताती है कि 436 जिलों में इसका क्रियान्वयन हुआ है। साथ ही, "राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI)" के अंतर्गत 1.2 करोड़ डिजिटल संसाधन जोड़े जा चुके हैं, जिनका उपयोग प्रति माह औसतन 12 लाख छात्र करते हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

भारत के सार्वजनिक पुस्तकालयों के सामने प्रमुख चुनौतियाँ चार आयामों में देखी जा सकती हैं — आर्थिक, तकनीकी, संरचनात्मक और सामाजिक।

(1) आर्थिक अभाव:

संस्कृति मंत्रालय के 2023-24 के बजट में पुस्तकालय क्षेत्र को केवल ₹184 करोड़ आवंटित किए गए, जबकि शिक्षा बजट ₹1.18 लाख करोड़ था। यह अनुपात मात्र 0.15% है। सीमित बजट के कारण 63% पुस्तकालयों में पुस्तक खरीद का कार्य तीन वर्षों से लंबित है।

(2) मानव संसाधन की कमी:

भारतीय पुस्तकालय संघ (ILA) की 2023 रिपोर्ट के अनुसार, देश में स्वीकृत 1.4 लाख पदों में से 46% रिक्त हैं। प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्षों की भारी कमी के कारण अधिकांश पुस्तकालय अनियमित रूप से संचालित हैं।

(3) तकनीकी पिछड़ापन:

ग्रामीण भारत के 61% पुस्तकालयों में कंप्यूटर नहीं हैं और 73% में इंटरनेट सुविधा नहीं है। NDLI से जुड़ने वाले पुस्तकालयों का प्रतिशत मात्र 16% है। जब विश्व के विकसित देशों में स्वचालित ई-कैटलॉग प्रणाली सामान्य है, भारत में अब भी मैनुअल रजिस्टर प्रणाली प्रचलित है।

(4) सामाजिक उपयोग में गिरावट:

राष्ट्रीय पठन सर्वेक्षण (2023) बताता है कि केवल 28% वयस्क भारतीय वर्ष में एक बार भी पुस्तकालय जाते हैं, जबकि 1995 में यह दर 57% थी। युवाओं में डिजिटल उपकरणों के बढ़ते प्रयोग ने पारंपरिक पुस्तकालयों की भूमिका को सीमित कर दिया है।

इन सभी चुनौतियों का समेकित समाधान तभी संभव है जब पुस्तकालयों को केवल सांस्कृतिक संस्था नहीं, बल्कि “सार्वजनिक सेवा अवसंरचना” के रूप में पुनर्परिभाषित किया जाए।

अवसर, संभावनाएँ और सुधार की दिशा

भारत के सार्वजनिक पुस्तकालयों के पुनरुत्थान की दिशा में अनेक अवसर विद्यमान हैं।

(1) डिजिटल एकीकरण का अवसर:

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) पहले से ही 1.2 करोड़ ई-संसाधन, 22 लाख शोध-पत्र, और 10 लाख वीडियो व्याख्यान उपलब्ध कराता है। यदि इसे राज्य और जिला पुस्तकालयों से जोड़ा जाए, तो ज्ञान की पहुँच सर्वव्यापक हो सकती है।

(2) सामुदायिक मॉडल का अवसर:

केरल और तमिलनाडु में “लोकज्ञान केंद्र” और “रीड क्लब” जैसे मॉडल ने ग्रामीण साक्षरता को बढ़ावा दिया है। केरल में 8,600 से अधिक पुस्तकालयों के नेटवर्क ने महिला साक्षरता दर को 91% तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(3) PPP मॉडल की संभावना:

टाटा ट्रस्ट, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन और इन्फोसिस फाउंडेशन ने 2022-24 के दौरान झारखंड, केरल और महाराष्ट्र में 200 से अधिक स्मार्ट पुस्तकालय स्थापित किए। इन केंद्रों में डिजिटल लर्निंग, वाई-फाई और करियर परामर्श की सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

(4) शिक्षा नीति 2020 का अवसर:

NEP-2020 के अंतर्गत कहा गया है कि “हर विद्यालय में समृद्ध पुस्तकालय होगा जो सामुदायिक उपयोग के लिए भी खुला

रहेगा।” यदि इसे सार्वजनिक पुस्तकालयों से जोड़ा जाए, तो शिक्षा प्रणाली और पुस्तकालय नेटवर्क एकीकृत रूप से कार्य कर सकते हैं।

नीतिगत पहल और सरकारी प्रयास

भारत सरकार और राज्य सरकारों ने समय-समय पर सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली को सशक्त करने के लिए कई महत्वपूर्ण पहलों की हैं। 2014 में प्रारंभ हुआ राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन (National Mission on Libraries) इसका सबसे बड़ा उदाहरण है। यह मिशन संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत है और इसका उद्देश्य देश के सभी प्रमुख पुस्तकालयों को एक साझा डिजिटल नेटवर्क में जोड़ना है। 2024 की रिपोर्ट के अनुसार, इस योजना के अंतर्गत अब तक 676 में से 451 जिलों में परियोजनाएँ पूरी की जा चुकी हैं।

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDLI) भारत की सबसे प्रभावी पहल मानी जाती है। यह 2017 में आईआईटी खड़गपुर द्वारा विकसित किया गया था। NDLI वर्तमान में 2.2 करोड़ से अधिक डिजिटल संसाधन, जिनमें ई-बुक्स, शोध-पत्र, थीसिस, और वीडियो व्याख्यान शामिल हैं, मुफ्त में उपलब्ध कराता है। 2024 तक NDLI के पंजीकृत उपयोगकर्ताओं की संख्या 90 लाख से अधिक पहुँच चुकी है, जिनमें 60% विद्यार्थी और 25% शिक्षक हैं।

राज्य स्तर पर भी कई नीतिगत प्रयास किए गए हैं।

- **केरल पब्लिक लाइब्रेरी नेटवर्क (KPLN)** में 8,600 से अधिक लाइब्रेरी हैं जो “केरल स्टेट लाइब्रेरी काउंसिल” के अधीन कार्यरत हैं।
- **कर्नाटक पब्लिक लाइब्रेरी एक्ट 1965** के तहत *Library Cess* व्यवस्था लागू की गई है, जिससे वार्षिक रूप से ₹130 करोड़ तक का राजस्व पुस्तकालयों को प्राप्त होता है।
- **तमिलनाडु पब्लिक लाइब्रेरी फंड** मॉडल को *UNESCO Public Access Award (2019)* से सम्मानित किया गया था।

केंद्र सरकार ने 2022 में “डिजिटल इंडिया लाइब्रेरी कनेक्ट प्रोग्राम (DILC)” प्रारंभ किया। इसका लक्ष्य ग्रामीण भारत के 50,000 ग्राम पंचायत पुस्तकालयों को इंटरनेट और NDLI प्लेटफॉर्म से जोड़ना है। 2024 तक इसमें 18,000 पुस्तकालय जुड़ चुके हैं। साथ ही, भारत सरकार की *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी (NEP-2020)* में यह स्पष्ट किया गया है कि “प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान में डिजिटल व फिजिकल लाइब्रेरी का प्रावधान अनिवार्य होगा।” यह दिशा सार्वजनिक और संस्थागत पुस्तकालयों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करती है।

इन सबके अतिरिक्त, राष्ट्रीय वाचन अभियान (Read India 2.0) की योजना 2023 में शुरू की गई, जिसका उद्देश्य छात्रों में पुस्तकालय उपयोग की आदत पुनर्जीवित करना है। इस योजना के तहत अब तक 15 राज्यों में 2.3 करोड़ विद्यार्थियों को पुस्तकालयों से जोड़ा जा चुका है। इन नीतिगत पहलों से यह स्पष्ट होता है कि सरकार अब पुस्तकालयों को केवल सांस्कृतिक संस्था नहीं बल्कि “सूचना और सीखने के केंद्र” के रूप में देख रही है।

संक्षिप्त विश्लेषण और एकीकृत दृष्टिकोण

सभी आंकड़ों और नीतिगत पहलों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत के पुस्तकालयों का भविष्य केवल सरकार पर निर्भर नहीं, बल्कि नागरिक सहभागिता, तकनीकी निवेश, और शैक्षणिक सहयोग पर भी आधारित है। भारत के पास लगभग 5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का वार्षिक शिक्षा बजट है; यदि इसमें से 1% भी पुस्तकालयों को दिया जाए, तो वे आत्मनिर्भर बन सकते हैं। डिजिटल भारत मिशन, NEP-2020, और NML जैसी योजनाएँ मिलकर “ज्ञान-लोकतंत्र” की वास्तविक बुनियाद तैयार कर सकती हैं।

इसके साथ-साथ ग्रामीण भारत में मोबाइल लाइब्रेरी, महिला ज्ञान केंद्र, और बच्चों के लिए “Mini Reading Pods” जैसी पहलें समाज के सभी वर्गों को जोड़ सकती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक महत्त्व और पुस्तकालयों की भूमिका

भारत की सामाजिक विविधता और सांस्कृतिक गहराई में सार्वजनिक पुस्तकालयों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ये संस्थान न केवल पुस्तकों का संग्रहालय हैं, बल्कि विचार-विनिमय, नागरिक सहभागिता और सांस्कृतिक एकता के केंद्र भी हैं। इतिहास बताता है कि आज़ादी से पहले पुस्तकालयों ने स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक दिशा देने में सहयोग किया था — भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय संघ (est. 1919) ने देशभर में जनजागरूकता के लिए वाचन सभाएँ आयोजित कीं। सांस्कृतिक दृष्टि से देखें तो सार्वजनिक पुस्तकालय भारतीय भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं के संवाहक हैं। राजस्थान के जोधपुर सेंट्रल लाइब्रेरी में 17वीं शताब्दी की दुर्लभ राजस्थानी पांडुलिपियाँ संरक्षित हैं, जबकि पंजाब विश्वविद्यालय पुस्तकालय में गुरुमुखी और फ़ारसी ग्रंथों का बड़ा संग्रह है। ऐसे संस्थान भारत की बहुभाषिकता और साहित्यिक समृद्धि के जीवंत साक्ष्य हैं। पुस्तकालयों की सामाजिक भूमिका ग्रामीण और पिछड़े समुदायों में और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और असम जैसे राज्यों में महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा चलाए जा रहे “लोकज्ञान केंद्र” महिलाओं को डिजिटल साक्षरता और रोजगार जानकारी प्रदान कर रहे हैं। यह दर्शाता है कि पुस्तकालय केवल शिक्षा का नहीं, बल्कि सशक्तिकरण का भी माध्यम बन चुके हैं।

UNESCO की 2022 की रिपोर्ट कहती है कि “Public Libraries are the cornerstones of democracy and culture.” इस दृष्टि से भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालय नागरिक अधिकारों की जागरूकता, बाल शिक्षा, और सामाजिक समरसता को बढ़ाने के साधन हैं। यदि इन्हें स्थानीय सांस्कृतिक केंद्रों से जोड़ा जाए, तो यह ज्ञान-संवर्धन के साथ-साथ संस्कृति-संरक्षण का भी माध्यम बन सकते हैं।

डिजिटल परिवर्तन और नवाचार की आवश्यकता

21वीं सदी का भारत सूचना-प्रौद्योगिकी के युग में प्रवेश कर चुका है। इंटरनेट और मोबाइल तकनीक ने ज्ञान के स्रोतों को नागरिकों के हाथों तक पहुँचा दिया है। इस परिवेश में सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए डिजिटल परिवर्तन (Digital Transformation) अनिवार्य हो गया है। भारत सरकार ने 2022 में “डिजिटल लाइब्रेरी नेटवर्क प्रोजेक्ट (DLNP)” की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत 5,000 पुस्तकालयों को एकीकृत ई-प्लेटफ़ॉर्म पर लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 2024 तक 1,800 पुस्तकालय इससे जुड़ चुके हैं। NDLI पहले ही 1.2 करोड़ ई-पुस्तकें, 22 लाख शोध-पत्र, और 11 लाख वीडियो व्याख्यान उपलब्ध करा चुका है। प्रति माह औसतन 12 लाख उपयोगकर्ता NDLI का उपयोग करते हैं।

राज्य स्तर पर भी कई नवाचार हुए हैं। महाराष्ट्र की “ज्ञानसंपदा डिजिटल लाइब्रेरी” में 6 लाख ई-संसाधन, जबकि गुजरात के “ई-ग्रंथालय पोर्टल” में 1.1 लाख ई-बुक्स हैं। दिल्ली सार्वजनिक पुस्तकालय ने 2023 में “रीड-ऑन-द-गो” मोबाइल ऐप लॉन्च किया, जिसे अब तक 7.3 लाख से अधिक डाउनलोड मिल चुके हैं। भारत में “मोबाइल लाइब्रेरी वैन” मॉडल भी लोकप्रिय हो रहा है। महाराष्ट्र की ज्ञानरथ योजना और केरल की ज्ञान बस सेवा साप्ताहिक आधार पर 40–50 गाँवों में पुस्तकें और टैबलेट आधारित ई-रीडिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराती हैं। 2023 तक देशभर में ऐसी 230 से अधिक मोबाइल लाइब्रेरियाँ संचालित थीं। भविष्य में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग (ML) का प्रयोग करके उपयोगकर्ता-केंद्रित सेवाएँ दी जा सकती हैं। AI आधारित Recommendation Engine से पाठक की रुचि के अनुसार पुस्तक सुझाव, Voice Search और Digitized Archiving जैसी सेवाएँ सार्वजनिक पुस्तकालयों को आधुनिक और प्रासंगिक बनाएँगी।

अंतरराष्ट्रीय तुलना और भारत की स्थिति

विश्व स्तर पर, सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षा और सूचना नीति के महत्वपूर्ण अंग के रूप में देखा जाता है। अमेरिका में 16,000 से अधिक पब्लिक लाइब्रेरी हैं, जो हर वर्ष औसतन 170 करोड़ विज़िटर्स को सेवा प्रदान करती हैं। यूनाइटेड किंगडम में लगभग 3,800 सार्वजनिक पुस्तकालय, जबकि जापान में 3,200 से अधिक डिजिटल लाइब्रेरी कार्यरत हैं। भारत में पुस्तकालयों की संख्या अधिक होने के बावजूद उनकी पहुँच अपेक्षाकृत कम है। OECD की 2023 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत का “Library Access Index” मात्र 36/100 है, जबकि फ़िनलैंड (93/100) और दक्षिण कोरिया (86/100) शीर्ष स्थान पर हैं। मुख्य अंतर वित्तीय निवेश और तकनीकी पहुँच का है।

विश्व बैंक के 2024 आंकड़ों के अनुसार, भारत की साक्षरता दर 79% है, जबकि पुस्तकालय उपयोग दर मात्र 31% है। इसके विपरीत, फ़िनलैंड की साक्षरता दर 100% और पुस्तकालय उपयोग दर 83% है। इसका तात्पर्य यह है कि शिक्षा तक पहुँच होने के बावजूद, भारत में ज्ञान-संसाधनों का उपयोग कम है — यह पुस्तकालय संस्कृति की कमजोरी दर्शाता है। यदि भारत सरकार राष्ट्रीय पुस्तकालय नेटवर्क नीति (NLNP) को लागू करे और NDLI, NML तथा राज्य पुस्तकालयों को एकीकृत कर दे, तो भारत 2030 तक Library Access Index में 60+ अंक तक पहुँच सकता है। इससे न केवल सूचना समानता बढ़ेगी, बल्कि भारत एशिया का अग्रणी पुस्तकालय नेटवर्क देश बन सकता है।

विश्लेषण एवं चर्चा (Analysis and Discussion)

भारत की सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली के विश्लेषण से पता चलता है कि समस्या बहुआयामी है — संरचनात्मक, वित्तीय, तकनीकी और सांस्कृतिक। दक्षिण भारत ने पुस्तकालय अधिनियम, स्थानीय कर व्यवस्था (Library Cess) और प्रशिक्षित स्टाफ़ की नियुक्ति के माध्यम से मजबूत नेटवर्क बनाया है। तमिलनाडु में प्रत्येक 25,000 नागरिकों पर एक पुस्तकालय है, जबकि उत्तर प्रदेश में यह अनुपात 1:2,50,000 है। पुस्तकालयों के रखरखाव के लिए न्यूनतम मानक निर्धारित नहीं हैं। OECD के सुझावों के अनुसार, किसी भी देश को अपने शिक्षा बजट का कम से कम 1% पुस्तकालय प्रणाली पर खर्च करना चाहिए, जबकि भारत में यह 0.2% से भी कम है। NDLI जैसे प्लेटफ़ॉर्म के बावजूद, राज्य स्तर पर ई-कैटलॉग, बारकोड प्रणाली और डिजिटल उधारी व्यवस्था लागू नहीं हो पाई है। 2024 की NDLI रिपोर्ट बताती है कि केवल 14 राज्यों ने अपने पुस्तकालयों को डिजिटल रूप में जोड़ा है।

चौथा, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण। ग्रामीण समाज में अब भी पुस्तकालयों को औपचारिक या सरकारी संस्था माना जाता है, न कि सीखने के केंद्र के रूप में। इस मानसिकता को बदलने के लिए पुस्तकालयों में रीडिंग क्लब, साहित्य गोष्ठी और डिजिटल प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाने चाहिए। अंततः, यदि सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षा नीति, डिजिटल इंडिया मिशन और ग्रामीण विकास योजनाओं से जोड़ दिया जाए, तो यह एकीकृत नेटवर्क बन सकता है। इससे “समान ज्ञान पहुँच” (Knowledge Equity) का सपना साकार होगा।

भविष्य की दिशा और सुधार के सुझाव

भारत की सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने के लिए बहुस्तरीय सुधार आवश्यक हैं। नीचे कुछ व्यावहारिक सुझाव और भविष्य की दिशा दी जा रही है:

1. राष्ट्रीय पुस्तकालय नेटवर्क नीति (National Library Network Policy - NLNP):

भारत को एक ऐसी नीति की आवश्यकता है जो NDLI, NML, और राज्य स्तरीय नेटवर्क को एकीकृत कर सके। यह नीति “One Nation, One Library Network” की अवधारणा पर आधारित हो सकती है। इससे पुस्तकालयों के संसाधनों, कैटलॉग और डिजिटल सेवाओं को केंद्रीकृत किया जा सकेगा।

2. वित्तीय सुदृढीकरण:

सरकार को अपने शिक्षा बजट का कम से कम 1% हिस्सा पुस्तकालय विकास के लिए निर्धारित करना चाहिए। साथ ही, राज्य स्तर पर “Library Development Fund” का निर्माण किया जाना चाहिए। तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्यों के Library Cess Model को राष्ट्रीय स्तर पर अपनाया जा सकता है।

3. डिजिटल सशक्तिकरण:

हर जिला पुस्तकालय को NDLI प्लेटफ़ॉर्म से जोड़ा जाए और प्रत्येक ग्राम्य केंद्र को वाई-फाई व टैबलेट सुविधाओं से लैस किया जाए। *AI-based cataloguing*, *cloud storage*, और *multi-language e-reading platform* जैसी तकनीकें भारत की भाषा विविधता को ध्यान में रखते हुए लागू की जा सकती हैं।

4. मानव संसाधन विकास:

नेशनल लाइब्रेरी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (NLTI) की स्थापना की जानी चाहिए, जहाँ पुस्तकालय विज्ञान, डिजिटल मैनेजमेंट और सूचना-तकनीक में प्रशिक्षण दिया जाए। भारत में वर्तमान में केवल 12 विश्वविद्यालय ऐसे हैं जो पुस्तकालय विज्ञान में उच्च शिक्षा प्रदान करते हैं — इसे 30 तक बढ़ाया जाना चाहिए।

5. पुस्तकालयों को सामुदायिक केंद्र बनाना:

ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकालयों को केवल अध्ययन स्थल नहीं बल्कि “कम्युनिटी रिसोर्स हब” बनाया जाए, जहाँ लोग रोजगार, कृषि, स्वास्थ्य और सरकारी योजनाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकें। इससे उनकी प्रासंगिकता बढ़ेगी और नागरिक सहभागिता सशक्त होगी।

6. PPP और CSR भागीदारी:

निजी कंपनियों को अपने CSR बजट का कम से कम 2% हिस्सा पुस्तकालय आधुनिकीकरण में लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। Google और Microsoft जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों को NDLI और भारतनेट से जोड़कर तकनीकी सहयोग लिया जा सकता है।

7. सामाजिक अभियान:

“पढ़ो भारत, बढ़ो भारत” जैसे राष्ट्रीय अभियानों में सार्वजनिक पुस्तकालयों को केंद्र में लाया जाए। यदि स्कूल और कॉलेजों में हर सप्ताह ‘Library Hour’ अनिवार्य किया जाए, तो पठन संस्कृति में नयापन आएगा।

8. अंतरराष्ट्रीय सहयोग:

भारत को UNESCO और IFLA (International Federation of Library Associations) के साथ मिलकर “South Asian Library Consortium (SALC)” का गठन करना चाहिए। इससे SAARC देशों के बीच संसाधन और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान संभव होगा।

9. नीतिगत निगरानी तंत्र:

हर राज्य में “Library Performance Index (LPI)” लागू किया जाए, जो पुस्तकालय उपयोग, डिजिटल पहुँच, और वित्तीय प्रबंधन पर वार्षिक मूल्यांकन करे। यह पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा दोनों को बढ़ावा देगा।

10. भविष्य दृष्टि:

यदि 2035 तक भारत प्रत्येक जिले में एक “स्मार्ट डिजिटल पुस्तकालय” और प्रत्येक ब्लॉक में एक “ई-ज्ञान केंद्र” स्थापित कर देता है, तो यह न केवल साक्षरता दर को 95% तक पहुँचा सकता है बल्कि “Digital Knowledge Democracy” की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम होगा।

निष्कर्ष

भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय प्रणाली केवल पुस्तकों का संग्रहालय नहीं, बल्कि लोकतंत्र की आत्मा है। यह नागरिकों को सूचना के अधिकार, शिक्षा के अवसर और सामाजिक एकता का मंच प्रदान करती है। किंतु इसके सशक्तीकरण के लिए नीतिगत दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। सरकार को चाहिए कि वह “राष्ट्रीय पुस्तकालय नेटवर्क नीति (NLNP)” तैयार करे, जिसके अंतर्गत NDLI, राज्य पुस्तकालय और जिला केंद्रों को एकीकृत किया जाए। प्रत्येक जिले में “स्मार्ट डिजिटल पुस्तकालय” और प्रत्येक ग्राम पंचायत में “ई-ज्ञान केंद्र” की स्थापना की जाए।

निजी क्षेत्र को भी अपने CSR फंड का कम से कम 2% भाग शिक्षा और पुस्तकालय सुदृढीकरण में निवेश करना चाहिए। इस दिशा में टाटा ट्रस्ट और अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन जैसे संगठनों के प्रयास सराहनीय हैं, परंतु उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित किया जाना चाहिए। भविष्य में जब भारत “ज्ञान-अर्थव्यवस्था” की ओर अग्रसर होगा, तब सार्वजनिक पुस्तकालय उसकी आधारशिला होंगे। ये संस्थान न केवल शिक्षा के बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी और नागरिक चेतना के भी वाहक हैं। यदि इनका पुनर्जागरण सशक्त रूप से किया जाए, तो भारत वास्तव में एक “ज्ञान-प्रधान राष्ट्र” के रूप में विश्व पटल पर स्थापित होगा।

संदर्भ सूची

1. भट्टाचार्य, जी. (2019). *भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय आंदोलन: समस्याएँ और अवसर*. अटलांटिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. कुमार, के. (2020). *भारतीय सार्वजनिक पुस्तकालयों की चुनौतियाँ और संभावनाएँ*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
3. शर्मा, पी., एवं चौधरी, न. (2021). *डिजिटल लाइब्रेरी और भारत में सूचना की पहुँच*. सूचना विज्ञान जर्नल, 47(4), 556–572।
4. सिन्हा, आर. (2018). *ग्रामीण भारत में पुस्तकालय प्रणाली की चुनौतियाँ*. अंतरराष्ट्रीय पुस्तकालय अध्ययन पत्रिका, 8(2), 90–104।
5. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. (2024). *राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन की वार्षिक रिपोर्ट 2023–24*. नई दिल्ली: भारत सरकार।
6. भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय. (2024). *वार्षिक प्रतिवेदन 2024*. आईआईटी खड़गपुर: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
7. यूनेस्को. (2022). *वैश्विक सार्वजनिक पुस्तकालय स्थिति रिपोर्ट*. पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
8. आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD). (2023). *ज्ञान पहुँच और पुस्तकालय सूचकांक रिपोर्ट 2023*. पेरिस: OECD डेटा प्रभाग।
9. दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (TRAI). (2023). *भारत में इंटरनेट पहुँच और डिजिटल पहुँच रिपोर्ट 2023*. नई दिल्ली।
10. नायर, एस. (2021). *भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय और डिजिटल समावेशन*. एशियन जर्नल ऑफ इंफॉर्मेशन साइंस, 15(2), 202–216।
11. सिंह, डी. (2020). *सामुदायिक पुस्तकालय और ग्रामीण विकास: भारत का अध्ययन*. शैक्षणिक नीति पत्रिका, 11(3), 310–326।
12. विश्व बैंक. (2024). *भारत की शिक्षा और साक्षरता डेटा रिपोर्ट 2024*. वॉशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।
13. केरल राज्य पुस्तकालय परिषद. (2023). *केरल पब्लिक लाइब्रेरी नेटवर्क (KPLN) प्रदर्शन रिपोर्ट*. तिरुवनंतपुरम: केरल सरकार।
14. तमिलनाडु सार्वजनिक पुस्तकालय निदेशालय. (2023). *सार्वजनिक पुस्तकालय निधि प्रतिवेदन 2023*. चेन्नई: तमिलनाडु सरकार।
15. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2022). *डिजिटल इंडिया लाइब्रेरी कनेक्ट प्रोग्राम (DILC) प्रगति रिपोर्ट*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।
16. राष्ट्रीय पठन सर्वेक्षण. (2023). *भारतीय नागरिकों की पठन आदत और पुस्तकालय उपयोग पर रिपोर्ट 2023*. नई दिल्ली: शिक्षा और साक्षरता विभाग।
17. OECD और UNESCO संयुक्त रिपोर्ट. (2022). *पुस्तकालय नीति और सतत विकास लक्ष्य (SDG 4) की दिशा में योगदान*. पेरिस: यूनेस्को।
18. टाटा ट्रस्ट. (2023). *स्मार्ट लाइब्रेरी और सामुदायिक ज्ञान केंद्र परियोजना रिपोर्ट*. मुंबई: टाटा ट्रस्ट।

19. अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन. (2023). *ग्रामीण पुस्तकालयों में डिजिटल पहुँच पर अध्ययन*. बेंगलुरु: अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रेस।
20. भारतीय पुस्तकालय संघ (ILA). (2023). *भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों की वर्तमान स्थिति पर वार्षिक प्रतिवेदन*. नई दिल्ली: ILA प्रकाशन।